Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

बिहार की संगीत परंपराः एक अवलोकन

विजय कुमार सिंह

संगीत शिक्षक,
रामबाबू +2 उच्च वि0 हिलसा, नालंदा।

शोध आलेख सारः—भारतीय संगीत कला आदि काल से भारत की समस्त कलाओं में एक उच्च स्थान प्राप्त करते आ रही है। संगीत, जिसमें गायन, वादन, एवं नृत्य तीनों का समावेश होता है । किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन की पहचान में संगीत का महत्व सभी संस्कृतियों में निर्णायक रहा है । यह एक ओर मनोरंजन का साधन है, तो दूसरी ओर सृजनशील अभिव्यक्तियों का माध्यम है । बिहार में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण है । महाभारत काल, रामायण काल, बौद्ध और जैन काल से लेकर वर्तमान समय तक संगीत के कई उतार चढ़ाव देखे है । मगध (वर्तमान बिहार) में प्राचीन समय से संगीत का केन्द्र विन्दु रहा है । नालन्दा विश्वविद्यालय, विक्रमशीला विश्वविद्यालय, उदन्तपुरी विश्वविद्यालय में संगीत के स्वतंत्र संकाय हुआ करता था । बुद्ध के समय से राजगीर, वैशाली, गया, पाटलीपुत्र जैसे नगरों में गायक, गायिकाओं और नर्तकियों एवं गणिकाओं की उपस्थिति के साक्ष्य मिलते हैं । बिहार में सूफी संतों के माध्यम से संगीत की प्रगति हुई, जबकि वैष्णव धर्म आंदोलन के माध्यम से नृत्य और संगीत दोनों का विकास हुआ । वर्तमान समय में गायन, वादन, नृत्य एवं लोक संगीत की परंपरा कायम है।

मुख्य शब्द—बौद्ध, जैन, मगध, बिहार, संगीत, गायक घराना, ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा, मार्गी एवं देशी संगीत इत्यादि।

प्रमुख कलाकार—क्षितिपाल मल्लिक, भैया लाल पखावजी, पद्मश्री राम चतुर मल्लिक, पद्मश्री सियाराम तिवारी, रामूजी, कामेश्वर पाठक, अभय नारायण मल्लिक, पन्ना लाल उपाध्याय, श्यामनारायण सिंह, डॉ0 नागेन्द्र मोहिनी, अरूण कुमार भास्कर इत्यादि।

भारतीय संस्कृति की प्राचीन भूमि बिहार की सांगीतिक सम्पदा गौरवपूर्ण, वैभवयुक्त और समृद्धशाली रही है। शास्त्रीय संगीत में बिहार की विरासत ध्रुपद, धमार, ख्याल और ठुमरी उल्लेखनीय है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास ध्रुपद से अविछिन्न रूप में जुड़ा हुआ है। बिहार में मुख्यतः मिथिला के शासक एवं टेकारी महाराज बड़े संगीतानुरागी थे। मिथिला के कर्णाटवंशीय राजाओं का शासन 1097 से 1324 ई. तक रहा। प्रथम शासक थे नान्यदेव और अंतिम हरिसिंह देव थे। नान्यदेव रचित 'सरस्वती हृदयालंकार' भारतीय संगीत शास्त्र का एक मूल्यवान ग्रंथ है। पटना के मो0 रजा ने नागमते–आसफी नामक पुस्तक की रचना की जो संगीत का एक बहुमूल्य पुस्तक है।

भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है लोचनकृत 'रागतरंगिणी'। इसकी रचना पं. लोचन ने 1685 ई. के आसपास की थी। यह ग्रन्थ संस्कृत में है और मिथिला की संगीत परम्परा का प्रामाणिक इतिहास भी माना जाता है। आगे चलकर इस गायन परंपरा में घनश्याम मल्लिक नामक गुणी गायक हुए जिनके सभी संतान शास्त्रीय संगीत के गायक थे। मल्लिक–परिवार द्वारा तिरहुत गीत का प्रचार निरंतर होता रहा, जो आज मिथिला के जनजीवन में प्रवाहित है। पं. लोचन ने इस ग्रंथ में 'तिरहुत' गीत का उल्लेख करते हुए 'मार्गी' एवं 'देशी' संगीत की सुन्दर व्याख्या किया है। बिहार में ध्रुपद के तीन प्रमुख केन्द्र रहे हैं। अमता (दरभंगा), डुमरॉव (भोजपुर) और बेतिया (पश्चिमी चंपारण) अमता घराने के संस्थापक थे भातृद्वय राधाकृष्ण–कर्त्ताराम। इन दोनों भाइयों ने वर्षों तक सेनिया घराना के महान गायक भूपत खां से ध्रुपद गान की शिक्षा प्राप्त की थी। भूपत खां न्यामत खां सदारंग के भतीजा और फिरोज खां अदारंग के भाई थे। तीन पीढियों के बाद भारतीय संगीताकाश में ध्रुपद के घूमकेत पद्मश्री (स्व.) पं. रामचतुर मल्लिक का उदय हुआ। इन्होने संगीत के शिक्षा अपने ममेरे भाई पं. क्षितिपाल मल्लिक से प्राप्त हुई थी। राजित रामजी एवं पं. क्षितिपाल मल्लिक की छत्रछाया में रामचतुर मल्लिक का सांगीतिक विकास हुआ। पं. क्षितिपाल मल्लिक के तीनों पुत्र नरसिंह मल्लिक (लाल बाबू), महावीर मल्लिक एवं यदुवीर मल्लिक ध्रुपद के अच्छे गायक थे। अमता में ध्रुपदगायन के साथ–साथ पखावज वादन की कला भी विकसित हुई। वैसे क्षितिपाल मल्लिक जी जब दरभंगा में थे तो दरभंगा महाराज के दरबार में भैयालाल पखावजी सबसे अधिक प्रतिष्ठित थे। उनके प्रमुख शिष्यों में पं0 विष्णुदेव पाठक (अमता) और आरा के जमींदार रईस श्री शत्रुंज्जय प्रसाद सिंह उर्फ ललन बाबू थे। अमता घराने के ध्रुपद गायकों में कुछ प्रमुख नाम हैं–श्री बिदुर मल्लिक, प्रेम कुमार मल्लिक, अभय नारायण मल्लिक और पखावज वादकों में सर्वश्री चन्द्रकुमार मल्लिक, रामाशीष पाठक, उदय कुमार मल्लिक आदि हैं। अमता की दीर्घकालीन ध्रुपद की परम्परा जीवन्त रूप में आज

भी है। बिहार का दूसरा प्रमुख ध्रुपद घराना डुमरॉव का है। डुमरॉव महाराज के दरबार में सुप्रसिद्ध गायक थे घनारंगजी जो उच्च कोटि के कवि एवं संगीत–रचनाकार थे। इनके अतिरिक्त अन्य कुछ विद्वान गायक हुए बच्चू मल्लिक, विश्वनाथ पाठक, सहदेव मल्लिक इत्यादि।

बिहार में संगीत का बेतिया घराना भी काफी महत्वपूर्ण है। महान सेनिया घराना के संगीतकार प्यारे खां, जो ध्रुपद और रबाब के विशेषज्ञ थे, बेतिया दरबार में आकर स्थाई रूप से रहे। बेतिया के महाराज आनन्द किशोर एवं नवल किशोर स्वयं ध्रुपद के उच्च कोटि के रचनाकार थे। इस घराने के कुछ गायक आज पुनः अपने पूर्वजों की कला–विद्या को जागृत करने में प्रयत्नशील हैं। गया के समीप एक गांव है इशरपुर एवं पवई जिसे टेकारी महाराज ने मल्लिक परिवारों को बसाया था। वहां मल्लिक परिवारों में अच्छे गायक–वादक हुए, जिनमें पं. राम गोविन्द पाठक (सितार वादक) एवं पं. वासुदेव उपाध्याय (पखावज वादक) का नाम उल्लेखनीय है। पाठक जी और इनके सुपुत्र श्री बलराम पाठक एक कुशल सितार वादक के रूप में देश भर में सुविख्यात थे। पं. वासुदेव उपाध्याय पखावज के सिद्धहस्त वादक थे। इनके दो सुपुत्र स्व. बलदेव उपाध्याय एवं श्री रामजी उपाध्याय और पौत्र स्व. पन्नालाल उपाध्याय एवं मदन मोहन उपाध्याय (तबला वादक) अपने परिवार की विरासत को कायम रखने में सफल रहे हैं। ध्रुपद के अतिरिक्त बिहार में ख्याल एवं ठुमरी की विशेषता रही है। गया एवं पटना इसका मुख्य केन्द्र रहा है। ख्याल गायकों में पं0 चक्रधर मिश्र, (बड़हिया घराना), पं0 रामप्रकाश मिश्र पं0 श्यामदास मिश्र, संगीत कुमार नाहर, आदि का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। गया शैली की ठुमरी मूलतः पूरब की ठुमरी है। इसमें चार संगीतकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। सर्वप्रथम गनपतराव भैया साहब (हारमोनियम वादक), मौजुदीन खां, जगदीप मिश्र (रामूजी) एवं बाबू सोहनी सिंह थे। अप्रतिम ठुमरी गायक मौजुदीन खां भैया साहब के प्रिय शिष्य थे। उधर, गया निवासी सोनी बाबू भैया साहब के हारमोनियम की अनूठी वादन शैली से प्रभावित होकर स्वयं हारमोनियम वादक के रूप में उभरे। गया की ठुमरी की चर्चा होने पर कई नाम आते हैं– वे है नकफोफा, मुनीश्वर दयाल, स्व. जयराम तिवारी, स्व. पं. कामेश्वर पाठक, पं. गोवर्धन मिश्र, राजेन्द्र सिजुआर एवं गया के तवायफों का ठुमरी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथिलांचल क्षेत्र में मांगन खवास एवं चंद्रशेखर खाँ (वनगाँव, सहरसा) एक सिद्धहस्त ठुमरी गायक थे। उनकी तारीफ बेगम अख्तर ने भी की थी। पं. सियाराम तिवारी मूलतः ध्रुपद, धमार के असाधारण गायक थे और धमार–गायन पर उनका असाधारण अधिकार था। साथ ही गया शैली की ठुमरी को जिस प्रकार वे प्रस्तुत करते थे तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। बुजुर्ग एवं अनुभवी हारमोनियम वादकों की परम्परा में लोहानीपुर (पटना) के श्यामनारायण

सिंह जो पं. केसो महाराज (पटना) के प्रिय शिष्य थे। उन्होंने भारत के सभी विख्यात कलाकारेां के साथ हारमोनियम वादन किया था और बिहार का नाम रौशन किया था। सांस्कृतिक केन्द्र मुजफ्फरपुर एवं भागलपुर के नाहर परिवार के गायकों एवं वादकों ने बिहार के संगीत परंपरा को बढ़ाने में महती योगदान दी है। वर्तमान समय में पं राम प्रकाश मिश्र (छपरा) बनारस एवं गया घराने के ठुमरी गायन के साथ–साथ गया शैली के हारमोनियम वादन में भी निपुणता प्राप्त है। बिहार की संगीत परम्परा को बढ़ाने में अविस्मरणीय योगदान रहा है। बिहार में गायन, वादन के साथ–साथ यहाँ शास्त्रीय नृत्यों की भी परम्परा रही है। बिहार में भरत नाट्यम, कत्थक एवं ओडिसी नृत्य के भी यहाँ कलाकार रहे हैं। अरूण कुमार भास्कर (भरत नाट्यम) डॉ0 नागेन्द्र मोहनी (कत्थक नृत्य) एवं मधुकर आनंद (कत्थक नृत्य) का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। यहाँ लोकसंगीत एवं लोकनृत्य एवं लोकगाथा की भी वृहत परंपरा रही है। पटना में ख्याल, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती आदि की परंपरा रही है। पटना के नबावों ने भारतीय संगीत को बचाये रखा और साथ ही पटना सिटी के तवायफों ने भारत के विभिन्न मंचों पर अपना कला का प्रदर्शन किया। पटना सिटी के जमींदारों एवं नबावों द्वारा शादी विवाह एवं अन्य अवसरों पर तवायफों द्वारा कई दिनों तक लगातार संगीत समारोह की आयोजन का प्रमाण मिलता है। पटना की पावन भूमि पर दुर्गा पूजा के अवसर पर लंगरटोली, (भारत माता मंडली), गाँधी मैदान, मुसल्लहपुर हाट, पटना जंक्शन आदि जगहों पर सांस्कृतिक संस्थाओं, संगीत मर्मज्ञों एवं संगीत प्रेमियों के द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्रख्यात कलाकारों को बुलाया जाता था और कई दिनों तक शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्यों का लुत्फ उठाया जाता था। यह सिलसिला कई वर्षो तक चलता रहा लेकिन आज यह परम्परा विलुप्त हो गया है। वर्तमान समय में संगीत विद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षण संस्थाओं आकाशवाणी एवं दूरदर्शन आदि इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया के माध्यम से बिहार के संगीत परंपरा को आगे बढ़ाया जा रहा है।

स्रोत ग्रंथ सूचीः–

1. बिहार की संगीत परंपरा–गजेन्द्र नारायण सिंह
2. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना–परम्परा – शम्भुनाथ मिश्र
3. पं0 लोचन कृत राग तरंगिनी– डॉ0 रीना सहाय
4. संगीत रचना रत्नाकर भाग–3– पं0 राज किशोर प्रसाद सिन्हा
5. गया घराने के ठुमरी गायक पं. कामेश्वर पाठक से साक्षात्कार के अंश (शोध प्रबंध करते वक्त)
6. शोध–प्रबंध – डॉ0 विजय कुमार सिंह